गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४०

दूषण पञ्जी

सामाजिक स्मृति आ ऐतिहासिक नैतिकता

Decoding the Panji of Mithila · Volume 6

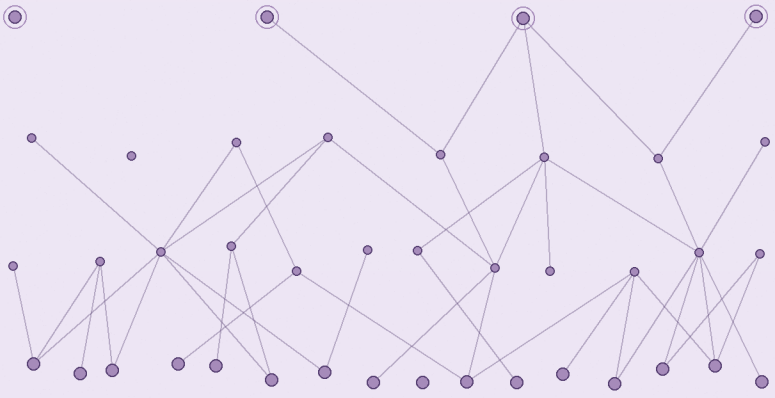

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

ISSN 2229-547X

खण्ड ४०

दूषण पञ्जी : सामाजिक स्मृति आ ऐतिहासिक नैतिकता

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

आधारग्रन्थ : Decoding the Panji of Mithila, Volume VI

विदेह · प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

प्रकाशनाधिकार आ पाठस्रोत

मूल शोध-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर। सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार।

मूल ग्रन्थक उपलब्ध अधिकार-विवरण अनुसार © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

समीक्षाक आधार Decoding the Panji of Mithila क सम्बन्धित मूल ग्रन्थ अछि। पञ्जी-पोथीक प्राचीन तिरहुता छवि अथवा स्वतंत्र पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष प्रमाणपरीक्षण एहि संस्करणमे दावा नहि कएल गेल अछि।

जाल-पता : https://www.videha.co.in/

प्रतिरूप : https://videha-ejournal.github.io/videha/

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — सात प्रकारक पञ्जी : एकहि सामाजिक अभिलेखक भिन्न काम 6

अध्याय २ — ‘वंशमे आएल क्षरण’ : स्रोतक वर्गीकरण आ मनुष्यक गरिमा 7

अध्याय ३ — अभिलेख निर्णय नहि : इतिहासलेखनक नैतिक अनुशासन 8

अध्याय ४ — सात प्रकारक पञ्जी आ संस्थागत वर्गीकरणक ऐतिहासिक बनावट 9

अध्याय ५ — हरिसिंहदेव, पञ्जीकार आ संस्थागत आरम्भक प्रमाण-परीक्षण 11

अध्याय ६ — उतेढ, सपिण्ड आ विवाहयोग्यता : गणना आ अधिकारक सम्बन्ध 13

अध्याय ७ — गोत्र–प्रवर–मूल : दूषण-पञ्जी पढ़बाक न्यूनतम व्याकरण 15

अध्याय ८ — बीस गोत्र आ १६७ मूल : सूची बनाम ऐतिहासिक पुष्टि. 16

अध्याय ९ — मूलग्राम आ प्रवास : वंशक स्थानिक स्मृति 17

अध्याय १० — दूषणक ९७ प्रविष्टि : निर्णय नहि, अनुसन्धानक एकाइ.. 18

अध्याय ११ — ‘अज्ञात’ : अभिलेखक सीमा आ सामाजिक सत्ता 19

अध्याय १२ — देवदासी, दासी आ मातृरेखा : स्त्री-अभिलेखक पुनर्पाठ. .20

अध्याय १३ — Dalit and Artisan Connections in Dushan Panji 21

अध्याय १४ — Muslim and Yavani Connections 23

अध्याय १५ — Widowhood, Remarriage, and the Hidden Social History of Women 25

अध्याय १६ — Gangesha, Tattvachintamani, and the Dushan Record 27

अध्याय १७ — Anandaa, Vallabha, Medha, Hira, Rahmu, Sohaago: Named Women and Hidden Mothers 29

अध्याय १८ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 1-25 31

अध्याय १९ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 26-50.....33

अध्याय २० — Entry-by-Entry Decoding: Cases 51-75.....35

अध्याय २१ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 76–97.....37

अध्याय २२ — The “Sixth Generation” Question: When Does Dushan Fade?
.....39

अध्याय २३ — Panji Vocabulary: Offices, Titles, Scholars, and Social Rank41

अध्याय २४ — Biji Purush and the Vamshavali Logic.....43

अध्याय २५ — Up-Tip and Nagaram: Regional Branching and the Pachhwari Par System.....45

अध्याय २६ — Panji, Hierarchy, and Social Damage.....47

अध्याय २७ — Plagiarism, Ownership, and the Struggle over Panji Knowledge.....49

अध्याय २८ — Tirhuta, Devanagari, Scan Copies, and the Preservation Problem.....51

अध्याय २९ — How to Read Dushan Panji Today.....53

अध्याय ३० — Conclusion: Dushan Panji as Mithila’s Difficult Truth.....55

सम्पादकीय भूमिका

पञ्जीक व्याख्या करैत व्यक्ति, ग्राम, गोत्र, मूल, सन्तति, विवाह, मातृक आ उपाधिसूचक पद अलग-अलग पढ़ब आवश्यक अछि। मूल अंग्रेजी ग्रन्थक व्याख्या आ ऐतिहासिक पञ्जीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रमाणस्तर नहि। एहि समीक्षामे उपलब्ध मूल पुस्तकक दावाक तर्कसंगति, पाठ-विभाजन, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक व्याख्याक औचित्य जाँचल गेल अछि।

पहिने स्रोतमे लिखल कथन, तकर बाद व्याख्यात्मक अन्वय, आ अन्तमे ऐतिहासिक अनुमान—ई क्रम निर्णायक अछि। पञ्जीक वंशस्मृतिसँ सामाजिक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि; मात्र एहि पाठमात्रसँ जैविक डीएनए-परीक्षणक प्रमाण नहि बनैत।

अध्यायवार मूल अध्ययन

अध्याय १ — सात प्रकारक पञ्जी : एकहि सामाजिक अभिलेखक भिन्न काम

पहिल अध्याय मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़ आ अस्वाजन्यपत्रक सात वर्गकेँ पञ्जी-व्यवस्थाक एकीकृत अवयव मानैत अछि। एहि वर्गीकरणसँ इतिहासकार बुझैत छथि जे विवाह-निर्णय, मूलवंश, ग्राम-परिचय आ सामाजिक पदक्रम अलग-अलग संचिकामे रहितो परस्पर आश्रित छल। ई अवधारणा दूषण पञ्जीकेँ अलग ‘दण्ड-पुस्तक’ मानबाक संकुचित दृष्टि हटबैत अछि।

एहि अध्यायक सामाजिक आलोचनात्मक उपलब्धि वर्गीकरणक भीतर शक्ति-सम्बन्ध खोजब अछि। पञ्जी ककरा नाम दैत अछि, ककरा अपूर्ण रूपेँ चिन्हित करैत अछि, आ ककरा सम्बन्धक कारणेँ याद रखैत अछि—ई प्रश्न स्त्री, सेवक, कारीगर आ कम प्रतिनिधित्व पबयवला समुदायसँ जुड़ैत अछि। अभिलेखक चुप्पीकेँ समाजक पूर्ण मौन मानब उचित नहि; मौखिक स्मृति आ आन प्रकारक स्रोतक सम्भावना सुरक्षित राखल जाय।

तिरहुता, देवनागरी रूपान्तरण आ छायापाठक प्रश्न आरम्भेमे राखल अछि। ई सम्पादकीय रूपेँ सही क्रम अछि, कारण लिखावट बदलला पर नाम, जाति-सङ्केत अथवा सम्बन्धक दिशा बदलिए सकैत अछि। मुद्रित रूपेँ दावाक आलोचना करबा सँ पहिने मूल पत्रक अक्षर तथा परिवर्तित पाठक अन्तर देखल जाय।

अध्याय २ — ‘वंशमे आएल क्षरण’ : स्रोतक वर्गीकरण आ मनुष्यक गरिमा

दोसर अध्याय दूषणक स्रोत-परिभाषा ‘वंशमे आएल क्षरण’ पर ध्यान दैत अछि। ई ऐतिहासिक अभिलेखक तत्कालीन वर्गीकरणक भाषा अछि, वर्तमान समीक्षकक नैतिक निर्णय नहि। तथाकथित ‘काली पोथी’क महत्त्व एतय सामाजिक भय, अन्तरसमुदायी सम्बन्ध आ अज्ञात मातृस्मृतिक छिपायल इतिहासमे अछि; ककरो जन्म वा परिवारपर आज दोष लगयबाक अधिकार एतयसँ नहि निकलैत अछि।

पुस्तकक व्याख्या दूषणकेँ विशुद्ध चारित्रिक निन्दासँ हटाय सामाजिक सत्ताक अभिलेख बनबैत अछि। ‘अज्ञात’ सन शब्द ज्ञानक मर्यादा दर्शबैत अछि, व्यक्तिक अस्तित्वहीनता नहि। एही प्रकारेँ दासी, देवदासी, विधवा, यवनी अथवा कर्मसमुदायक उल्लेख अभिलेखक रूढ सामाजिक वर्गीकरण अछि। एकरा इतिहासक सामग्री मानब आवश्यक अछि; एकरा आजुक पहचानक दण्ड बनबाएब नैतिक आ पद्धतिगत दुनू दृष्टिसँ अनुचित अछि।

आलोचनात्मक सावधानी ई सेहो जे प्रत्येक चिह्नक पाछाँ भेल वास्तविक घटना अभिलेखमे पूर्णतः वर्णित नहि होइत अछि। मूल स्रोत कखनहुँ सामाजिक निर्णय, अफवाह वा अधूरा सुनेल जानकारी दर्ज कऽ सकैत अछि। एही कारणेँ प्रविष्टिक अस्तित्व, ओहि प्रविष्टिमे कएल दावा आ बाह्य साक्ष्यसँ सिद्ध इतिहासक बीच अन्तर अनिवार्य अछि।

अध्याय ३ — अभिलेख निर्णय नहि : इतिहासलेखनक नैतिक अनुशासन

तेसर अध्याय ग्रन्थक नैतिक केन्द्र अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे अभिलेखमे लिखल वर्गीकरण व्यक्ति अथवा वंशजक नैतिक निर्णय नहि अछि। स्रोतक पुरान भाषा हटाय देब इतिहासकेँ अस्पष्ट बना सकैत अछि; ओकरा आजुक अपमानजनक अर्थमे दोहरायब नव अन्याय पैदा करत। एहि दुनू दोषसँ बचबाक लेल मूल पद अक्षुण्ण राखि ओकर समयसापेक्ष अर्थ स्पष्ट करब उचित अछि।

‘घटना’, ‘स्रोतक श्रेणी’ आ ‘आजुक इतिहास-विवेचन’—एहि तीन धरातलकेँ अलग राखबाक अध्यायक प्रस्ताव अनुकरणीय अछि। विशेषतः महिला, विधवा, अन्तरसमुदायी परिवार अथवा अज्ञात मातृवंशक सम्बन्धमे अभिलेखक एक शब्दक आधारपर सहमति, शोषण, प्रेम, आर्थिक परिस्थिति वा सामाजिक प्रतिष्ठाक कल्पना नहि जोड़ल जाए। कखनहुँ अभिलेख मौन रहैत अछि; ओहि मौनक अर्थ तय करबाक अधिकार उत्तरकालीन पाठककेँ बिना साक्ष्य नहि अछि।

जीवित व्यक्ति, परिवार आ समुदायकेँ कलंकित करबाक सम्भावना रहला पर शोध-प्रकाशनमे संवेदनशीलता आवश्यक अछि। एहन अध्ययनक उपलब्धि हिंसात्मक पदावलीकेँ पुनर्जीवित करब नहि, अपितु वर्गीकरण बनबाक सामाजिक इतिहास देखब अछि। छठम खण्डक आगाँक ९७ प्रकरण-पाठ एहि आरम्भिक नैतिक प्रतिज्ञाक कसौटीपर परखल जाएत।

अध्याय ४ — सात प्रकारक पञ्जी आ संस्थागत वर्गीकरणक ऐतिहासिक बनावट

चारिम अध्याय ‘The Panji System before Fragmentation’ दूषण-पञ्जीकेँ अलग कलंकसूची मानबाक बदला व्यापक पञ्जी-परिसरमे रखैत अछि। मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़ आ अस्वजन्य अथवा सिद्धान्त-पत्र सम्बन्धी वर्गीकरण स्रोतमे जुड़ल सात प्रकारक रूपमे दिहल अछि। एहि विभाजनमे प्रत्येक ग्रन्थक खास व्यवहारिक काम देखाइत अछि : पूर्वज-स्मृति, शाखागत क्रम, गोत्रक पहचान, वंशज-ज्ञान, विवादित सामाजिक वर्गीकरण आ विवाहयोग्यता सम्बन्धी निर्णय। लेखक ई मानैत छथि जे अलग ग्रन्थसभ बनलाक बादो एहन जानकारी एकहि सामाजिक व्यवस्थाक परस्पर निर्भर भाग रहल।

अध्यायक एकटा उपयोगी ऐतिहासिक प्रश्न अछि—सामाजिक श्रेणीकरण प्रारम्भसँ अखण्ड छल कि कालनुसार बदलल? माधव सिंहक सन्दर्भमे पृथक शाखा-पञ्जी, प्रतिष्ठाक श्रेणी आ पञ्जीबद्ध नामक विभाजनक जे विवरण अछि, ओ स्रोतपरम्पराक भीतर सामाजिक बनावट बदलबाक संकेत दैत अछि। मुदा राजकीय काल, ग्रन्थ-रचनाक दिनांक आ पछिला संपादकीय टीप एकसमान कालक साक्ष्य नहि। एहि लेल स्रोतक संस्कृतिकृत श्रेणी आ वास्तविक ऐतिहासिक प्रशासन बीचक सम्बन्ध सप्रमाण ठहरब उचित अछि।

दूषण पदक ऐतिहासिक प्रयोग समकालीन व्यक्ति अथवा परिवारपर नैतिक निर्णय लागू करबाक आधार नहि। चारिम अध्याय एहि विशेष नीतिक पक्षमे तर्क दैत अछि : वंशवर्गीकरणक समूचा ढाँचा देखला बिना दूषण-पाँतिक अर्थ टूटल मिलत। ‘दूषण’क संदर्भमे सामाजिक स्वीकृति आ अस्वीकृतिक इतिहास देखब जरूर, मुदा पूर्वजक नामक आधारपर वंशजकेँ शर्मिंदा करब शोध-नैतिकताक विरुद्ध अछि।

पाठीय आलोचनाक दृष्टिमे सातविध पञ्जी सामाजिक प्रशासनक बहुस्तरीय दस्तावेजक छवि बनबैत अछि। एकरा आधुनिक सरकारी पहिचान-प्रणालीसँ

तुलना करब सम्भव अछि, तथापि दुनू व्यवस्था एक नहि। पञ्जीकारक नियम, संस्था द्वारा स्वीकृत विवाह-अभ्यास आ समाजक बहिष्करण सभकेँ एक स्वतंत्र ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे पढ़ब चाही। ई दृष्टि आगेक हरिसिंहदेव आ उतेढ़-विवेचन लेल आवश्यक आधार देत अछि।

अध्याय ५ — हरिसिंहदेव, पञ्जीकार आ संस्थागत आरम्भक प्रमाण-परीक्षण

पाँचम अध्याय ‘Harisinghdev, the Panjikars, and the Official Beginning of the System’ स्रोत-परम्पराक आधारपर हरिसिंहदेवक राजकीय भूमिकाकेँ पञ्जीक व्यवस्थित सार्वजनिक आरम्भसँ जोड़ैत अछि। ग्रन्थ शक १२४८, अर्थात् १३२६ ईस्वीक उल्लेख करैत अछि आ विद्वानसभक सहभागितासँ बिखरल घर-वंशस्मृतिक संगठित अभिलेख बनबाक कथा दैत अछि। ई लेखकक प्रस्तुत स्रोत-आश्रित कालक्रम अछि; सभ पञ्जी-पाँतिक रचनाक एकल प्रमाणित आरम्भ-दिन नहि। पुरान वंशस्मृति आ लिखित संस्थागत व्यवस्था भिन्न ऐतिहासिक स्तर अछि।

पञ्जीकारक प्रशासनिक भूमिका केवल नाम लिखब नहि छल; प्रस्तावित विवाहमे स्वजन अथवा अस्वजन सम्बन्धक जाँच आ अनुकूल स्थिति पर निर्णय-पत्र देब सेहो छल। ग्रन्थ ‘अस्वजन पत्र’ आ ‘सिद्धान्त पत्र’ सन पदक विवेचन करैत अछि। ई प्रसंग अभिलेख, गणना आ सामाजिक विधिकताक परस्पर सम्बन्धक निकट उदाहरण अछि। तथापि एहि पत्रक सामाजिक स्वीकृति आ आजुक राजकीय वैधानिक प्रमाणपत्रक कानूनी दर्जा समान मानब नहि चाही।

लेखक मूल, गोत्र, प्रवर आ बीजी पुरुषक श्रेणीसभकेँ परम्परागत प्रशासनक व्यावहारिक सूत्र कहैत छथि। एतय व्यक्ति-पहिचानक विस्तार विवाह-संबन्धी अनुशासनक उपकरण बनैत अछि। आलोचनाक प्रश्न अछि जे एहन पद्धतिक संहिताकरण परिवारक स्मृतिमे कोन सुरक्षा अनलक आ एकहि संग कोन लोककेँ अधिकारक दायरा सँ बाहर रखलक। संस्थागत इतिहासक ई दुइ दिसा देखब पञ्जीक महिमा-वर्णन वा पूर्ण निन्दासँ अधिक समर्थ पद्धति अछि।

पाँचम अध्याय अपन ‘Source Notes’ मे कतेको दावाकेँ स्रोतक कथनक रूपमे स्पष्ट करैत अछि; ई उल्लेखनीय सम्पादकीय गुण अछि। तखनहु

नाम, तिथि आ राजकीय संस्थाक पुष्टि लेल दिनांकित पाण्डुलिपि, समकालीन शिलालेख अथवा स्वतंत्र ऐतिहासिक अध्ययन खोजब अलग अनुसन्धानक काम रहत। एहि सीमाकेँ स्पष्ट रखलासँ स्रोत-विवरणक मूल्य घटैत नहि, बल्कि काल-निर्धारणक विद्वत्तापूर्ण विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

अध्याय ६ — उतेढ़, सपिण्ड आ विवाहयोग्यता : गणना आ अधिकारक सम्बन्ध

छठम अध्याय ‘Uthedh, Sapinda, Swajana, and the Logic of Marriage Eligibility’ पञ्जीव्यवस्थाक व्यवहारिक गणना केन्द्रमे रखैत अछि। वर–कन्याक गोत्र, प्रवर, मूल, पिता–माताक पूर्वज आ विवाह-निषेधक सम्बन्ध जाँचबाक प्रश्न एहि अध्ययनक आधार अछि। ‘उतेढ़ पञ्जी’कँ सपिण्ड-निकटता घटबाक दूरी मापबाक उपकरणक रूपमे विवेचित कएल गेल अछि; स्रोत-स्मृतिमे छह पूर्वजक उल्लेख सेहो उद्धृत अछि। ई मूलतः अभिलेखसँ निर्धारित सामाजिक विवाह-नियमक विषय अछि, आधुनिक डीएनए परीक्षणक सीधा प्रतिरूप नहि।

ग्रन्थमे सात पीढ़ी, पाँच मातृ-पक्षीय आ छह पितृ-पक्षीय पीढ़ीक चर्चा विभिन्न प्रसंगमे आबैत अछि। एकर विश्लेषणमे नियमक पाठ, गणनाक आधार-व्यक्ति, गिनतीक आरम्भ आ अपवाद सब पृथक् लिखल रहनाइ आवश्यक अछि। अलग प्रामाणिक परम्परा अथवा ग्रन्थमे पीढ़ीक सीमा बदलि सकैत अछि; अतः सभ संख्याकँ एकहि सार्वदेशिक गणना कहब अनुचित अछि। एहि जगह वंश-प्रविष्टिक गणना जँ स्पष्ट नहि देखाओल जाए, तँ पाठक एकसमान संख्यासँ विपरीत निष्कर्ष निकालि सकैत छथि।

‘स्वजन’ आ ‘अस्वजन’क अभिलेखीय अर्थ एहि अध्यायमे प्रस्तावित विवाहक अनुमतिसँ सम्बन्धित अछि। ई पदसभकँ समाजक समस्त नाते-रिश्ताक नैतिक दर्जा कहि देब अर्थविस्तार होयत। पञ्जीकारक प्रमाणक आधार वंशस्मृति आ तत्कालीन नियम छल; प्रत्येक विवाहक वास्तविक सामाजिक स्थिति आ स्त्रीक इच्छाक समग्र इतिहास एहि पत्रसँ स्वतः उपलब्ध नहि अछि। एतय सामाजिक विधान आ अधिकार-अध्ययनक भेद राखब अध्यायक नृवंशविज्ञानिक गंभीरता बढ़बैत अछि।

दूषण-पञ्जीक बादक प्रकरणसभ पढ़बाक लेल छठम अध्यायक प्रश्न निर्णायक अछि : कोन सम्बन्ध नियमतः अनुमत, कोन निषिद्ध, आ कोन

घटना बादमे सामाजिक वर्गीकरणक कारण बनल? एकटा नाम वा पारिवारिक श्रेणी बिना समय, नियम आ प्रसंगक इतिहास बताए व्यक्तिक अपराध वा दोष सिद्ध नहि करैत अछि। अध्यायक मूल योगदान ई अछि जे तकनीकी विवाह-व्यवस्थाक व्याख्याक संग नैतिक दूरी राखबाक अवसर दैत अछि; समीक्षामे एहि दूरीकेँ अनिवार्य मानल गेल अछि।

अध्याय ७ — गोत्र-प्रवर-मूल : दूषण-पञ्जी पढ़बाक न्यूनतम व्याकरण

सातम अध्याय दूषणक विशिष्ट प्रविष्टि पढ़बाक पहिने गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम, बीजी पुरुष आ शाखाक अर्थ स्पष्ट करैत अछि। एतय सामाजिक वर्गीकरणक पद केकरो वर्तमान नैतिक व्यक्तित्वक निर्णय नहि। नियमक ऐतिहासिक क्रिया समझब आ नियमकेँ अनुमोदन करब दूनू अलग काम अछि।

एकहि प्रविष्टिमे प्राचीन ऋषि-सम्बन्ध, ग्राम, शाखा आ विवाह-मार्गकेँ एकरेखीय वंशरेखामे सीमित नहि करब चाही। श्रेणीसभक फराक अर्थ सुरक्षित राखनाइ आगेक ९७ दूषण-प्रविष्टि पढ़बाक आधार बनैत अछि।

“A Dushan entry may not always state the gotra explicitly, because the mool name or the larger Panji context may already imply it for the trained reader.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

“The distinction between son and daughter is especially important in Dushan Panji.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

अध्याय ८ — बीस गोत्र आ १६७ मूल : सूची बनाम ऐतिहासिक पुष्टि

आठम अध्याय बीस गोत्र आ १६७ मूलक परम्परागत वर्गीकरण लऽ कऽ अबैत अछि। सूची अभिलेखक आन्तरिक प्रणाली बुझय लेल महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा प्रस्तुत प्रत्येक संख्याक उत्पत्ति आ प्रत्येक मूलनामक मानकीकृत वर्तनीक निरीक्षण मूल सूचीसँ करब अपेक्षित अछि।

गोत्रक ऋषि-सम्बन्ध आ मूलक क्षेत्रगत वंशस्मृति अलग स्तर अछि। सूचीकेँ ‘शुद्धता’क वैज्ञानिक परीक्षण मानब अनुचित होयत। एहि विवेकसँ दूषणसँ जुड़ल सामाजिक वर्गीकरण विश्लेषणक वस्तु बनैत अछि, निर्णयक माप नहि।

“Thus, in a Panji entry, gotra answers one kind of question: “Which ancestral rishi-line or descent-field is this?” Mool answers another: “Which ancient lineage-root within that gotra does this person belong to?” Moolgram refines it further: “Which remembered village or later branch-location now identifies this stream…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

“The source distinguishes मौलिक उच्चारण from लौकिक उच्चारण.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

अध्याय ९ — मूलग्राम आ प्रवास : वंशक स्थानिक स्मृति

नवम अध्याय मूलनाम आ मिथिलाक ग्रामसमूहक इतिहास जोड़ैत अछि। माण्डर, दरिहरा, सरिसब जकाँ नाम स्थानीय अभिलेखक सन्दर्भ देबैत अछि; ओ प्रत्येक बेर उपस्थित व्यक्तिक रहनिहार वा जन्मग्रामक प्रमाण नहि।

स्थानसूचक शब्दक अर्थ मूल-आवास, उत्तरवर्ती निवास अथवा वैवाहिक सम्पर्कक बीच बदलि सकैत अछि। जँ एहि तीनूकेँ अलग चिह्न नहि भेटत तँ सामाजिक इतिहासकेँ गलत प्रवासमानचित्र बना देब सम्भव अछि।

“The source uses the example of सोदरपुर. The mool is one, but several later मूलग्राम or branch-village forms appear around it: सोदरपुर सरिसव, सोदरपुर मानी, सोदरपुर दिगउन्ध, सोदरपुर कटका, सोदरपुर रैयाम, सोदरपुर हसौली, सोदरपुर हाटी, and others. This shows that a single root could produce many…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

“पाली / पलिवाड़, करमहा, बुधवाल, घुसौत, गंगोली, पर्वपल्ली, and other mools similarly show how a root identity could branch into many local lines.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

अध्याय १० — दूषणक ९७ प्रविष्टि : निर्णय नहि, अनुसन्धानक एकाइ

दसम अध्याय ९७ दूषण-प्रकरण पढ़बाक विधि दैत अछि। प्रत्येक प्रविष्टिमे क्रमांक, स्रोतपृष्ठ, मूल, व्यक्ति, स्त्री-सम्बन्ध, वर्ग, पीढ़ीक दूरी आ विवेचनक सन्दर्भ राखबाक आग्रह अछि। ई विधि पुरान अपमानसूचक नामांकनकेँ तथ्यक रूपमे बिना जाँच स्वीकार करबाक विरोध करैत अछि। स्रोतमे जँ ‘अज्ञात’ अछि, तकरा अस्पष्ट व्यक्तिक दोष अथवा रहस्यक निश्चित कथा बनाओल नहि जाए। आरोप-भाषा आ अभिलेख-पठनक बीच ई नैतिक दूरी अध्यायक मूल उपलब्धि अछि।

“Each numbered item in the Dushan table should be treated as a case.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

“Many entries name community or caste-marked terms: चमरू, चर्मकारिणी, रजक, रजकी, हाडी, हाडिनी, ताँती, धीवर, तैलिक, गोप, यादव, दासी, देवदासी, and others.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

अध्याय ११ — ‘अज्ञात’ : अभिलेखक सीमा आ सामाजिक सत्ता

एगारहम अध्याय ‘अज्ञात’केँ केवल सूचनाक अभाव नहि, सामाजिक वर्गीकरणमे चिन्हित अज्ञाततताक रूपमे देखैत अछि। ‘अज्ञात वंश’, ‘अज्ञात कुल’ आदि सूत्र कखन अभिलेखक अपूर्णता व्यक्त करैत अछि आ कखन सामुदायिक अस्वीकृति, ई प्रश्न मूल प्रसंग देखिकय तय होयत।

एहि श्रेणीक पाठ पढ़ैत आधुनिक पाठक केकरो नैतिक अपमान नहि करथि। अज्ञात नामक स्रोतसम्बन्धी सीमा याद राखि काज करब इतिहासक वैज्ञानिक अनुशासन आ सामाजिक उत्तरदायित्व दुनू अछि।

“The Panji system depended on recognized connections. A person could be placed by father, mother, mool, moolgram, gotra, pravara, wife, daughter, son, daughter’s son, or branch. But when a maternal side was not known, when a wife’s origin could not be certified, when a daughter’s line…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

“The maternal line is the place where many Dushan entries become visible.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

अध्याय १२ — देवदासी, दासी आ मातृरेखा : स्त्री-अभिलेखक पुनर्पाठ

बारहम अध्याय स्त्रीक उपस्थितिकेँ केवल पिता-पतिक नामक बीचक सेतु मानबाक बदलामे स्वतंत्र अभिलेखीय प्रश्न बनबैत अछि। देवदासी आ दासी सन पद स्रोतसमयक सामाजिक वर्गीकरण अछि; एखन ओकरा व्यक्तिक चरित्रक प्रमाण मानब नहि चाही।

मातृरेखाक माध्यमसँ पता चलैत अछि जे दूषण-सूची पितृवंशक अपवाद नहि, जटिल सामाजिक सम्बन्धक दर्पण सेहो अछि। स्त्रीक उल्लिखित नाम, ऐतिहासिक कड़ी आ आलोचकक अनुमान अलग राखब आवश्यक अछि।

“Several entries use the expression माता followed by देवदासी.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

“This is especially important for the later entry-by-entry chapters.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

अध्याय १३ — Dalit and Artisan Connections in Dushan Panji

दलित आ शिल्पी समुदायसँ सम्बन्धित प्रविष्टिसभमे चर्मकारिणी, रजकी आदि पद कखन स्त्रीक सम्बन्ध, कखन जातिसूचक वर्गीकरण, आ कखन सामाजिक निर्णयक शब्द भऽ जाइत अछि। एतय वर्गीकृत मनुष्यक आवाज स्रोतमे अनुपस्थित भऽ सकैत अछि; अभिलेखक मौनकेँ हँसि-हँसि सामाजिक तथ्य नहि ठहराएब। स्रोत शब्दकेँ ऐतिहासिक उद्धरणक हदमे राखि वर्तमान वंशजक गरिमा आ गोपनीयताक रक्षा आवश्यक अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखकेँ केवल ‘अपराधक सूची’ कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

“A major mistake in reading Dushan Panji is to treat each community term as if it were only a caste label.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

“The Dushan material also records artisan and occupational groups beyond the Chamar and Rajak clusters.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

दूषण पञ्जीमे दलित आ शिल्पी समुदायसूचक पद सामाजिक सम्पर्कक प्रमाण हो सकैत अछि, वर्तमान व्यक्तिक कथित अशुद्धताक नहि। प्रत्येक पद कखन मातृक, कखन वैवाहिक आ कखन मूल-सम्बन्धक मार्ग अछि, से तय कएल बिना सामाजिक सिद्धान्त बनायब अनुचित अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय

आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय १४ — Muslim and Yavani Connections

अध्याय यवनी सम्बन्धी पदक व्याख्यामे दौलतिजहाँ सन नामित स्त्रीकेँ सामुदायिक वर्गीकरणक भीतर सँ देखबैत अछि। प्रविष्टि ८६मे बेटी-पक्षक सम्बन्धक उल्लेख अछि। एहि साक्ष्यसँ समुदायसभक ऐतिहासिक सम्पर्कक सम्भावना खुलैत अछि, मुदा स्त्रीक व्यक्तिगत धर्म, स्वेच्छा, वास्तविक निवास वा समग्र जीवनचरित स्वतः निर्धारित नहि होइत अछि। ऐतिहासिक शब्द ‘यवनी’केँ आधुनिक व्यक्ति विषयक प्रमाणपत्र बना देब अनैतिक आ अप्रमाणिक दुनू अछि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“The table material places दौलतिजहाँ in relation to mool chains such as सोदरपुर, पाली, सतलखा, गंगोली, नदाम, and other names.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

“The source further records “अफेल-यवनीपुत्रीसँ विवाह.” This is a compact but powerful notation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

‘यवनी’क अर्थ समय आ अभिलेखक अनुसार भिन्न भऽ सकैत अछि; एकरा बिनु प्रसङ्ग आधुनिक धार्मिक पहिचानक स्थिर पर्याय मानब जोखिमपूर्ण अछि। पञ्जीक उल्लेखित सम्बन्धकेँ वर्तमान समुदाय अथवा वंशजपर दोषारोपणक सामग्री बनाओल नहि जाए।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा

समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय १५ — Widowhood, Remarriage, and the Hidden Social History of Women

विधवा आ पुनर्विवाहक अध्यायमे प्रकरण २८ आ ९४क अलग-अलग शब्दप्रयोग पाठमे चिन्हित अछि। ‘विधवा’ एक सामाजिक अवस्था, ‘वार्तिनी विधवा’ सन पद ऐतिहासिक आरोप-सूचक श्रेणी सेहो भऽ सकैत अछि। अनुसन्धानमे समाजक मूल्यांकन आ स्त्रीक वास्तविक जीवन अलग राखब अनिवार्य अछि। केवल पत्नी/माता पदसँ चित्रित महिलाक इच्छाक बारेमे निश्चित कथन नहि बनब; अभिलेखक पक्षपात स्वयं समालोचनाक विषय अछि।

कन्या अथवा माताक बारेमे लिखल परम्परागत पद स्वयं ओ स्त्रीक मनोभाव वा स्वतंत्र वैवाहिक निर्णयक साक्ष्य नहि। अभिलेखक भाषा आ वास्तविक जीवनक इतिहासक बीच ई अन्तर बचाए रखनाइ आवश्यक अछि।

एहि अध्यायक पाठमे स्त्री सम्बन्धक उपस्थितिसँ शक्ति-संरचनाक प्रश्न उठैत अछि। मुदा वर्तमान नैतिक मानदण्डक भाषामे पुरान व्यक्तिपर दोष देबाक बदला नियम आ संस्थागत वर्गीकरणक समीक्षा महत्त्वपूर्ण अछि।

“One of the relevant entries is explicitly headed विधवा.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

“In many entries, women appear only through relational phrases: mother, wife, daughter, widow, unknown mother, or the daughter of someone else.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

पञ्जीमे विधवा अथवा पुनर्विवाहक पद भेटला पर घटना, संस्थागत वर्गीकरण आ स्त्रीक अपन जीवनानुभव तीन फराक स्तर होइत अछि। मूल स्रोतमे स्त्रीक भावनात्मक संसारक प्रत्यक्ष बयान नहि हो तँ सामाजिक इतिहासकार ओकर कथा गढ़थि नहि। एहि अध्यायक नैतिक पद्धति एहि भेदपर निर्भर अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय १६ — Gangesha, Tattvachintamani, and the Dushan Record

गङ्गेशक नाम आ ‘तत्त्वचिन्तामणि’क उल्लेख दूषण पञ्जीमे आयब एकटा मूल्यवान बौद्धिक-सामाजिक साक्ष्यक प्रश्न खोलैत अछि। मुदा ग्रन्थकारक दार्शनिक योगदान आ कुलसूचीक सामाजिक आरोप एकटा प्रमाण-परिसर नहि। ‘पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष’ सन पदक कालार्थ प्रसंगसहित जाँचबाक अछि; एतय अप्रमाणित जीवनचरित भरब अनुचित। पूर्वसाक्ष्य आ विरोधी साक्ष्य मिलाएब; वंशगत दोषारोपणसँ तर्कशास्त्रीय रचनाक मूल्य नापल नहि जा सकैत अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखकेँ केवल ‘अपराधक सूची’ कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

“The Dushan table contains an entry marked by the phrase तत्त्वचिंतामणि कारक गंगेश.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

“In Panji logic, the question is often genealogical distance: who was connected to whom, through which mother or daughter, and after how many generations the effect ceased for marriage eligibility.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

विशिष्ट दार्शनिक व्यक्तिक नाम पुरान सामाजिक अभिलेखमे आयलासँ एकर बौद्धिक महत्त्व बढ़ैत अछि, मुदा दार्शनिक ग्रन्थक रचना, कालक्रम आ वंशसम्बन्ध अलग स्रोतसँ जाँचय योग्य अछि। लोकक प्रतिष्ठा आ पञ्जीगत वर्गीकरणक तनातनीकेँ पाठ स्वयं सहैत अछि; एकरा अनदेखा नहि करब चाही।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय १७ — Anandaa, Vallabha, Medha, Hira, Rahmu, Sohaago: Named Women and Hidden Mothers

आनन्दा, वल्लभा, मेधा, हीरा, रहमू आ सोहागोक स्पष्ट नाम अभिलेखमे स्त्रीक पहचानक कतिपय झरोखा अछि। मुदा स्त्रीक नाम बचि गेलासँ ओकर कथन अथवा अनुभव सेहो बचल अछि—एहन निष्कर्ष नहि होइ। ‘माता अज्ञात’ सन सूत्र असल जीवनक अनामता नहि, लेखाजोखाक अज्ञान अथवा सामाजिक मौनक प्रत्यक्ष लेखा भऽ सकैत अछि। समीक्षाक नैतिक मूल्य ओहि खाली स्थानमे कल्पित कथा नहि भरबामे अछि।

स्त्रीक नामक अभिलेखीय स्थान एकरेखीय पुरुषवंशक संरचनासँ भिन्न सामाजिक मार्ग देखबैत अछि। मातृक सम्बन्ध, कन्याक विवाह आ दौहित्रक कड़ीकेँ एकहि कोटिमे नहि मिलायब चाही।

कन्या अथवा माताक बारेमे लिखल परम्परागत पद स्वयं ओ स्त्रीक मनोभाव वा स्वतंत्र वैवाहिक निर्णयक साक्ष्य नहि। अभिलेखक भाषा आ वास्तविक जीवनक इतिहासक बीच ई अन्तर बचाए रखनाइ आवश्यक अछि।

“The difficulty is that the archive often remembers women in damaged language.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

“A recurring pattern in Dushan Panji is the phrase माता followed by a category or a short explanation: अमुकक-माता, विद्यापतिक-माता, सुरपतिक-माता, रामदत्त-माता, or माता अज्ञात.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

आनन्दा, वल्लभा, मेधा, हीरा, रहमू आ सोहागो सन नाम अभिलेखक भीतर महिलाक वास्तविक दृश्यता दैत अछि। मुदा प्रत्येक स्त्रीक सामाजिक सम्बन्ध अथवा जीवनवृत्तान्त समान नहि। कतेक नाम व्यक्ति अछि, कतेक परम्परागत चिह्न, एकर सम्बन्धसूचक पदसँ जाँच अपेक्षित अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय

आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय १८ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 1-25

प्रकरण १–२५क दायरा अधूर मातृक, अन्तर्जातीय सम्बन्ध आ देवदासी-सूचक प्रविष्टिक विभिन्न समूह खोलैत अछि। सुरुक सरिसव १७८/१ सन सङ्केत पारदर्शी रूपेँ स्रोत-क्रम दैत अछि। मुदा समीक्षकक पुनर्व्याख्या आ मूल श्रेणी-सूचक पद सदा अलग राखब चाही, नहि तँ ‘अज्ञात’क वर्णन पुनः नवीन दण्ड-व्यवस्था बनि सकैत अछि। एकर सार्थक पाठ प्रत्येक प्रकरणक सङ्केत, शब्द, व्यक्तिसम्बन्ध आ अनिर्णीत अर्थक पृथक् पञ्जी बनेब होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“The fifth visible block begins with सरिसव १८६ and proceeds through करमहा, सकराढ़ी, राघवक मातृक, सोदरपुर, अलय, माण्डर, सुरगन, पचही, पकलिया, and सिम्भुनाम.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

“Case 16 lists सोदरपुर, खौआल, सोदरपुर, दरिहरा, पनिचोभ, चान्दो, तिलय, खौआल, and सोदरपुर.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

मूल ९७ प्रकरणक पहिल चौथाइ सन्दर्भपठनक व्याकरण सिखबैत अछि। एक-एक प्रकरणक स्रोत सङ्केत, मूल, मातृक कड़ी आ श्रेणीकरण अलग राखि लिखल गेलासँ अनवधानमे कलङ्कक पुनरुत्पादन रुकैत अछि। प्रत्येक प्रकरणक मूल पाँति बिना सामाजिक कथा प्रस्तुत करब जाँचक विषय रहत।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय ११ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 26-50

प्रकरण २६मे ‘अज्ञात कुल’क उल्लेख, २८मे विधवाक प्रसंग आ २९–३०मे रजकसम्बन्धी स्मृति अलग-अलग प्रकृतिक सूचना अछि। एहि सबकेँ दूषण नामक एकहि वर्गमे समेटल ऐतिहासिक पञ्जीकारक निर्णय भऽ सकैत अछि, इतिहासकारक नहि। प्रकरण ३५–४०मे निषिद्धकुलक श्रेणी खुलैत अछि; एकर आधार आ समाजपर तकर असर अलग प्रश्न अछि। नाम, प्रविष्टिक मूल शब्द आ वर्तमान नैतिक मूल्यांकनक बीच रेखा स्वच्छ रहबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Cases 31 to 34 form a compact series around unknown maternity.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

“Case 50 is also headed चर्मकारिणी. It moves through सोदरपुर, अलय, माण्डर, नरउन, पनिचोभ, खण्डवला, डीह दरिहरा, ब्रह्मपुर, and कोरई. It names मेधा, शंकर, गादू, अफेल, मुशे, विद्यापति, रत्नाकर, मतिकर, मांगु, and माण्डर. It also includes the reference १८९/१ and the notation सुरपतिक-माता (चर्मकारिणी), followed by…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

दोसर प्रकरणसमूहमे पारिभाषिक पदक पुनरावृत्ति देखलासँ सभ घटनाकेँ एकहि प्रकारक सामाजिक इतिहास मानब गलत होयत। विशेष व्यक्तिक नाम, मातृक सम्बन्ध, मूलग्राम, सामाजिक पद आ नोंदक उद्देश्य परस्पर भिन्न भऽ सकैत अछि। प्रमाणित कड़ीक बिना प्रकरणसभक आपसी सम्बन्ध दावा नहि करबाक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २० — Entry-by-Entry Decoding: Cases 51-75

प्रकरण ५१–७५ मे मेधा, हाड़ी/हाड़िन, रजक, गोप आ तेली-सूचक अनेक सम्बन्ध अभिलेखित अछि। विषयक व्यापकता देखबैत अछि जे दूषण-पञ्जी केवल एक प्रकारक वैवाहिक अपवादक लेखाजोखा नहि अछि। एतय समाजक बहुस्तरीय सम्पर्कक इतिवृत्तक अवशेष अछि, मुदा दर्ज सम्बन्धसँ संबंधित व्यक्तिक दोष वा अपरिचित जीवनक निष्कर्ष निकालब स्रोतसँ बाहर होयत। एक-एक स्त्रीक नाँव आ सम्बन्धपद बचा राखब एहि ऐतिहासिक अध्ययनक वास्तविक कसौटी अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“Case 54 places a Rajak connection inside a broad route beginning with खौआल, वहेराढ़ी, माण्डर, सकौना, दिघोइ, and पाली.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

“Case 74 is marked नरबंगा शाखा and यादव जयसिंह.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

एहि खण्डमे ‘गुरुपत्नी’क विषयक उल्लेखक सन्दर्भमे मूल क्रम पुनः देखबाक आवश्यकता अछि; विषय-सूचीमे नामक स्थान आ मूल सूचीमे वास्तविक प्रविष्टिक स्थान समान होएब आवश्यक नहि। सामाजिक आरोप-भाषा पढ़बाक काल इतिहासकारक उत्तरदायित्व मौन रिक्ततासँ आरोपसँ भरब नहि अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २१ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 76–97

प्रकरण ७६–९७क अन्तिम खण्डमे अनेक मातृक, विवाह आ सामाजिक वर्गीकरणक पद एकत्र अछि। ई पहिनुक १–७५क निरन्तरता अछि, अलग समाजक निर्णायक अभियोगपत्र नहि। हर प्रकरण संग प्राचीन शब्द, मूल सङ्केत आ आजुक व्याख्याक अन्तर रखब आवश्यक अछि।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Cases 76–97 show that the Dushan table grows denser as it moves toward the end.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“Entry-by-Entry Decoding: प्रकरण 76–97” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २२ — The “Sixth Generation” Question: When Does Dushan Fade?

‘छठम पीढ़ी’क प्रश्न स्रोतमे सामाजिक दागक अवधि आ पुनःस्वीकृतिक सम्भावनाक समस्या अछि। एतय पीढ़ीक गणना ऐतिहासिक समाजक विधान भऽ सकैत अछि; आनुवंशिक शुद्धताक वैज्ञानिक मापन नहि। समाज जे व्यक्तिक सम्बन्धकेँ बहिष्करणद्वारा चिन्हैत छल, से बादमे स्वीकार सेहो करैत छल—एहि परिवर्तनक राजनीतिक अर्थ गम्भीर अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखकेँ केवल ‘अपराधक सूची’ कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

“The fading of Dushan depends on several linked ideas: distance from the original event, intervening marriage routes, recognition by society, and continued record within the Panji system.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“Social forgetting is often treated as carelessness. In Dushan Panji, however, forgetting can also be a form of rehabilitation. The source itself notes that some facts had rightly been forgotten by later society. The implication is that historical truth should be preserved for learning, but not…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“The “Sixth Generation” Question: When Does Dushan Fade?” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २३ — Panji Vocabulary: Offices, Titles, Scholars, and Social Rank

पञ्जीमे विद्वत् बिरुद, न्यायिक पद आ राजसेवाक उपाधि व्यक्ति-सामाजिक स्थितिक संकेत दैत अछि। तकर अर्थ समयसापेक्ष अछि; आजुक प्रशासनिक पदक्रम वा शैक्षिक प्रमाणपत्रसँ सीधा अनुवाद अनुचित। नाम आ उपाधिक मिलान विभिन्न अभिलेखीय रूपसँ सत्यापित करब चाही।

पञ्जीमे उपाधि महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रमाण अछि, मुदा ओहि एकटा पदवीसँ व्यक्ति-विशेषक सम्पूर्ण कृति-सूची, नियुक्ति अथवा तिथि सिद्ध नहि होइत अछि। विद्वत् पहचान लेल स्वतंत्र पाठ आ ऐतिहासिक साक्ष्य खोजब आवश्यक अछि।

ज्ञानक प्रतिष्ठा, परिवारक वंशक्रम आ वैवाहिक सम्बन्ध एकहि पाँतिमे भेटि सकैत अछि। एहि तीनूकेँ अलग दर्ज कएलासँ मिथिलाक बौद्धिक इतिहासक ओ रूप देखाइत अछि जे आधुनिक जीवनीमे हेरा जाइत अछि।

“Based on Chapter 23 plan and the source note listing scholarly abbreviations such as म.म., सदु उ., वैया., ज्यो., as well as state and social terms including शान्ति-विग्रहिक, पार्णागारिक, भाण्डागारिक, स्थानान्तरिक, राजवल्लभ, धर्माध्यक्षक, and धर्माधिकरणिक.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“Panji Vocabulary: Offices, Titles, Scholars, and Social Rank” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण

आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २४ — Biji Purush and the Vamshavali Logic

‘बीजी पुरुष’ ओ पहिने ज्ञात नाम छथि जतयसँ अभिलेखीय वंशरेखा शुरू होइत अछि। एकरा सचमुच पहिल जैविक पूर्वज मानब भूल होयत। वंशावलीक शुरुआत स्मृतिक सीमा सेहो अछि; ओहिक पाछाँक पीढ़ी खोजब ऐतिहासिक जिज्ञासा हो सकैत अछि, प्रमाणित सूची नहि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“The Panji entry often compresses several coordinates: patra number, mool, branch, person, spouse or daughter-line relation, and descendants.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“Based on Chapter 24 plan and the source explanation that Panji collection treated Biji Purush and moolgram as central anchors for organizing kualik identity and lineage memory.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“Biji Purush and the Vamshavali Logic” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २५ — Up-Tip and Nagaram: Regional Branching and the Pachhwari Par System

उटीप, नगराम आ पछ्वारी-पारक अनेक नामकरण एकटा गतिशील अभिलेखीय व्यवस्था देखबैत अछि। क्षेत्र, मूल-वर्ग, विवाह-सूत्र आ प्रतिलिपि-परम्पराक भिन्न भूमिका पहिचानल जाए। कोनो एक पदक आगमनसँ संगहि सम्पूर्ण वंशक भूगोल पुनर्लेखन नहि कएल जाए। संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“The source distinguishes multiple Panji forms: मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़, and अस्वाजन्यपत्र.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“Based on Chapter 25 plan and the source statements that earlier mool Panji were common, later branch books were made, and that Up-Tip/Sotipura, Nagaram/Pachhwari Par, gotra Panji, and patra Panji were recorded in Mithilakshar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“Up-Tip and Nagaram: Regional Branching and the Pachhwari Par System” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २६ — Panji, Hierarchy, and Social Damage

श्रेणी-निर्धारणक सामाजिक हानि एहि अध्यायक मुख्य प्रश्न अछि। वंश-स्मृति सुरक्षित रखबाक संस्था अपन नियमसँ बहिष्कार आ अपमान सेहो पैदा कऽ सकैत छल। दमनक ऐतिहासिक साक्ष्य देखबामे पञ्जीकारक शब्द उद्धृत हो, मुदा समीक्षा ओहि शब्दक अन्यायपूर्ण शक्ति दृढ़तासँ परखय।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

प्रविष्टिमे जतेक वंश-सम्बन्ध स्पष्ट अछि ततबे दर्ज कएल जाए। ‘अज्ञात’ अथवा वर्गभेदसँ नामित कोनो व्यक्तिक कृत्य, चरित्र वा जातीय स्थिति अतिरिक्त प्रमाण बिना निर्धारित नहि करबाक चाही।

“The same critique connects Panji-based hierarchy to child marriage and a sharp growth in widowhood.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“The source also notes the absence of strong reform movements in favor of widow remarriage and against child marriage in Mithila.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“Panji, Hierarchy, and Social Damage” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २७ — Plagiarism, Ownership, and the Struggle over Panji Knowledge

पञ्जी-ज्ञानक लेखकीयता, नकल आ स्वामित्वक विवाद विषयक अध्यायमे मूल प्रकाशन-इतिहासक दावे आबैत अछि। ककरो प्रतिलिपि अथवा नकलकेँ चोरी कहबाक निष्कर्ष लेल दस्तावेज, तिथि आ वास्तविक पाठ-समानताक स्वतंत्र परीक्षण चाही। तात्पर्य ई जे स्रोतक आरोप स्वयं न्यायिक प्रमाण नहि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“Panji knowledge is communal inheritance, but preservation labor is not ownerless.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“When credit is erased, preservation becomes exploitation. When sources are named and labor is credited, the archive becomes a shared foundation for further research. This is especially important for Dushan Panji because the material is sensitive. Careless reuse can injure descendants; careless appropriation can erase custodianship.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“Plagiarism, Ownership, and the Struggle over Panji Knowledge” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

समयगत आ वैज्ञानिक पद स्रोतक व्याख्यामे प्रयुक्त भेल अछि। सामाजिक वंशावलीकेँ जैविक नमूना-परीक्षणक प्रत्यक्ष परिणाम नहि मानल जाए; परम्परागत कालस्मृति आ जीवित पाण्डुलिपिक लेखनकाल सेहो अलग-अलग अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २८ — Tirhuta, Devanagari, Scan Copies, and the Preservation Problem

मिथिलाक्षर/तिरहुता सँ देवनागरी लिप्यन्तरण आ छायाप्रतिक अनुक्रमकेँ एक पाठ नहि मानल जाए। लिप्यन्तरण वर्तनी बदलि सकैत अछि; छवि अपन अपूर्णता राखि सकैत अछि। शोध मे मूल छवि, पाँति-सङ्ख्या, पढ़ल पाठ आ प्रस्तावित सुधारक पृथक् स्तम्भ रहनाइ आवश्यक अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

“The source provides links to Dushan Panji, branch Panji, old Panji copies, Uthedh Panji, patra Panji, moolgram Panji, and other related materials.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“Tirhuta, Devanagari, Scan Copies, and the Preservation Problem” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण

आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय २९ — How to Read Dushan Panji Today

आधुनिक पाठक लेल पहिल नैतिक नियम अछि जे दूषण-प्रविष्टिक उपयोग ककरो अपमानक औजार नहि हो। पुरान सामुदायिक श्रेणीसँ आजुक व्यक्तिक चरित्र नहि मापल जाए। प्रमाणक आलोचना करैत ऐतिहासिक अन्यायक चर्चामे प्रभावित व्यक्तिसभक गरिमा आ वर्तमान वंशजक गोपनीयता सुरक्षित रहय।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

प्रविष्टिमे जतेक वंश-सम्बन्ध स्पष्ट अछि ततबे दर्ज कएल जाए। ‘अज्ञात’ अथवा वर्गभेदसँ नामित कोनो व्यक्तिक कृत्य, चरित्र वा जातीय स्थिति अतिरिक्त प्रमाण बिना निर्धारित नहि करबाक चाही।

“Dushan Panji is valuable because it breaks the myth of a closed, pure, static Mithila.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Identify whether the issue is caste/community, unknown lineage, widowhood, migration, office, or prohibited relation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“How to Read Dushan Panji Today” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

अध्याय ३० — Conclusion: Dushan Panji as Mithila’s Difficult Truth

अन्तिम अध्याय पञ्जीक आनुष्ठानिक नियम, सामाजिक वर्गीकरण आ सम्बन्धस्मृतिक जटिलताकेँ एकत्र लाबैत अछि। ग्रन्थक सार्थक निष्कर्ष एतहि अछि जे सामाजिक अभिलेखकेँ इतिहासक वस्तु बनाओल जाए, आधुनिक दण्ड-विधान नहि। साक्ष्य, अनिश्चय आ नैतिक जिम्मेदारी तीनू साथ रहबाक चाही।

प्रविष्टिमे जतेक वंश-सम्बन्ध स्पष्ट अछि ततबे दर्ज कएल जाए। ‘अज्ञात’ अथवा वर्गभेदसँ नामित कोनो व्यक्तिक कृत्य, चरित्र वा जातीय स्थिति अतिरिक्त प्रमाण बिना निर्धारित नहि करबाक चाही।

एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखकेँ केवल ‘अपराधक सूची’ कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

“It reveals that marriage rules mattered deeply. It reveals that gotra, pravara, mool, moolgram, Biji Purush, sapinda, swajana, aswajana, and Uthedh were part of a sophisticated information system. It reveals that women, though often hidden, carried the consequences of descent. It reveals that Dalit, artisan, Muslim…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“The final position of this volume is therefore clear: preserve the archive; decode it carefully; credit the labor; protect descendants; study women and social contact seriously; and reject the misuse of Panji as a weapon.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“Conclusion: Dushan Panji as Mithila’s Difficult Truth”

शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

दूषण-वर्गीकरणक विश्लेषणमे अभिलेखक अपमानसूचक अथवा श्रेणीसूचक शब्द उद्धृत भए सकैत अछि, मुदा ओहि शब्दकेँ वर्तमान व्यक्ति वा समुदायक मूल्याङ्कन बना देब स्रोत-समीक्षाक सीमा लङ्घन होयत। एतय आलोचना दर्ज घटना, तकर परम्परागत नाम आ आधुनिक सामाजिक विवेचनक तीन अलग स्तर राखैत अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

दूषण-पञ्जी सामाजिक नियमक अभिलेख अछि; ओहि नियमक नैतिक समर्थनक ग्रन्थ बनब आवश्यक नहि। स्त्री, शिल्पी, दलित, मुसलमान अथवा ‘अज्ञात’ लिखल व्यक्तिक स्थान अभिलेखमे जे रूपेँ दर्ज अछि, से वर्णित समाजक दृष्टि बुझबैत अछि; एहीसँ तिनकर अन्तःकरण वा वास्तविक आचरणक सत्य निर्धारित नहि होइत अछि।

प्रकरण १–९७क पाठमे ‘छठम पीढ़ी’ सन सामाजिक पुनःस्वीकृतिक प्रथा आधुनिक आनुवंशिक शुद्धिक विज्ञान नहि। पुरान शब्दक उद्धरण आ आजुक मनुष्यक गरिमाक बीच दृढ़ भेद राखब जरूरी अछि। तिरहुता मूल, देवनागरी लिप्यन्तरण, आधुनिक प्रतिलिपि आ आलोचकक व्याख्या क्रमशः पृथक् पाठावस्था अछि।

स्रोत-विवेकक मर्यादा

समीक्षा मूल ग्रन्थक अध्यायानुक्रम, शब्दप्रयोग आ व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। प्राथमिक पञ्जीक स्वतन्त्र मूल-पृष्ठ, दिनाङ्कयुक्त प्रमाण, संस्कृत/तिरहुता समांतर संस्करण, आनुवंशिक प्रयोगशालाक आँकड़ा आ अभिलेखित व्यक्तिसभक आजुक वंशजक विषयमे स्वतंत्र प्रमाणन एतय नहि कएल गेल अछि।

ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र। Decoding the Panji of Mithila, Volume VI। उपलब्ध मूल ग्रन्थ-पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४०

दूषण पञ्जी

दूषण पञ्जीक ऐतिहासिक वर्गीकरण, स्त्रीक
अभिलेखीय उपस्थिति आ सामाजिक सम्पर्कक
विश्लेषण। पुरान अभिलेखकेँ पढ़ैत
आजुक मनुष्यक गरिमा सुरक्षित रखबाक आग्रह।

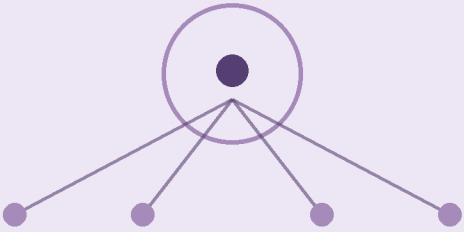

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

Videha GitHub

प्रतिलिप्याधिकार २०२६ : गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर